वर्षात पर, मनोभावों की अभिव्यक्ति, एक सहमा सा डर!!...

ऐ वक़्त, जरा ठहर.., ज़रा सहम,

क्या पता, क्या बचा..,

क्या रहा अधूरा!..

वक़्त ने तो दिया था सभी को,

एक सा सहारा।

वक्त्त-वक़्त की चाल है,

बेमिसाल भी बेहाल है!..

अगर कुछ और भी बचा,

तो वक़्त ठहर ही जा।

कुछ और भी विध्वंश, अगर कही..,

निपट ले, यही ज़रा।

कल की कौन जाने,

क्या पता, वो किसकी सुने..,

अगर चलो उस पार प्रिये..,

पावन-परिणय सा हो भला!.

सुबह की बूँद-बूँद में ओस हो,

हर ओस में एक आस हो।

एक आस सा अहसास हो,

अहसास में तुम प्राण प्रिये!..

नव-वर्ष में तुम प्राण प्रिये,
वक़्त को ही साध चलो,
ग़र वक़्त साधन हो चले,
अहसास में, सब प्राण प्रीतम।
सब प्राण प्रीतम जहाँ बस चले,
मनोभाव की संसार तुम।
जहाँ संसार ही प्राण प्रिये,
बस यूँ ही बसो, नव-वर्ष तुम।
ताकीद है, यह वर्ष तुम्हे,
छोड़ न जाओ कोई प्राण यहाँ!..
ग़र ग़म अगर भी साथ हो,
ठहर जा, सहम जा तू वर्ष यही।
जब पाक हो, तेरा ज़मीर,
फिर कहे बिना आ जाना तुम..,
विश्वास रखो, हम हो न हो..,
पर प्राण प्रियो की फ़ौज सब,
ग़र आलिंगन बद्ध हो जाये, सब
फिर भी मौन ही हँसना तुम।
ऐ वक़्त, ज़रा ठहर, ज़रा सहम!...